आकार IAS

Shaping Your Dreams

इतिहास एवं संस्कृति

मुख्य परीक्षा

मध्यकालीन भारत का इतिहास

प्रश्नपत्र-01 | भाग-01 | इकाई-02

160/4, A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)

aakarias2014@gmail.com www.aakarias.com

9713300123, 6262856797, 6262856798

प्रश्न पत्र -01

मध्यकालीन भारत का इतिहास
MEDIEVAL INDIAN HISTORY

❐ भाग-1 : इतिहास एवं संस्कृति

इकाई-2

- 11वीं से 18वीं शताब्दी तक भारत का राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास।
- मुगल शासक और उनका प्रशासन, मिश्रित संस्कृति का अभ्युदय।
- ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था एवं समाज पर प्रभाव।

❐ Part-1 : HISTORY AND CULTURE

UNIT-II

- Political, Economical, Social and Cultural History of Central India 11th to 18th Century A. D.
- Mugals and their Administration, Emergence of Composite Culuture.
- Impact of British Rule on Indian Economy and Society.

परीक्षा योजना

सामान्य अध्ययन के प्रथम प्रश्न-पत्र के भाग-I की इकाई-II का **पूर्णांक 30** है

इकाई	प्रश्न	संख्या	x	अंक	=	कुल अंक	आदर्श शब्द सीमा
इकाई-2	अति लघु उत्तरीय	03	x	03	=	09	10 शब्द या 01 पंक्ति
	लघु उत्तरीय	02	x	05	=	10	50 शब्द या 05 से 06 पंक्तियां
	दीर्घ उत्तरीय	01	x	11	=	11	200 शब्द

विषय सूची (CONTENTS)

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
01	इस्लाम का उदय	01
02	खलीफा	02
03	अरब आक्रमण	02 - 03
04	तुर्क आक्रमण : महमूद गजनवी एवं मुहम्मद गोरी	04 - 12
05	गुलाम वंश : कुतुबुद्दीन ऐबक, आराम शाह, इल्तुतमिश, रुकनुद्दीन फिरोज, रजिया सुल्तान, बहराम शाह, मसूद शाह, नासिरूद्दीन महमूद, बलबन, कैकुबाद एवं क्यूमर्श	13 - 24
06	खिलजी वंश : जलालुद्दीन फिरोज खिलजी, अलाउद्दीन खिलजी, शिहाबुद्दीन उमर, मुबारक शाह खिलजी एवं खुसरो शाह	25 - 36
07	तुगलक वंश : गियासुद्दीन तुगलक, मुहम्मद-बिन-तुगलक, फिरोज शाह तुगलक, फिरोज शाह तुगलक के उत्तराधिकारी एवं नासिरूद्दीन महमूद	37 - 56
08	सैय्यद वंश : मुबारक शाह, मुहम्मद शाह एवं आलम शाह	57
09	लोदी वंश : बहलोल लोदी, सिकन्दर लोदी एवं इब्राहिम लोदी	58 - 61
10	सल्तनतकालीन सीमान्त नीति या मंगोल नीति	62 - 66
11	सल्तनतकालीन प्रशासन	67 - 70
12	इक्तादारी व्यवस्था	71 - 72
13	सैन्य व्यवस्था	73
14	न्याय व्यवस्था	73
15	गुप्तचर व्यवस्था	73
16	भू-राजस्व व्यवस्था	74 - 75
17	अर्थव्यवस्था	76 - 77
18	सामाजिक जीवन	78 - 82
19	तकनीकी परिवर्तन	83
20	स्थापत्य कला या वास्तुकला	84 -89
21	संगीत कला	90
22	चित्रकला	91

आकार IAS
Shaping your Dreams...
160/4 - A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)
e-mail : aakarias2014@gmail.com ; **Website :** www.aakarias.com
CONTACT : 9713300123, 6262856797, 6262856798

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
23	शिक्षा–व्यवस्था	92
24	साहित्य	93 – 97
25	प्रांतीय राज्य : बंगाल, उड़ीसा, जौनपुर, कश्मीर, गुजरात, मालवा एवं मेवाड़	98 – 103
26	बहमनी राज्य एवं विजयनगर	104 – 119
27	भक्ति आन्दोलन एवं सूफी आन्दोलन	120 – 139
28	मुगल साम्राज्य : बाबर, हुमायूँ, शेरशाह, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ एवं औरंगजेब	140 – 205
29	उत्तरवर्ती मुगल शासक : बहादुर शाह प्रथम, जहाँदार शाह, फर्रुखशियर, मुहम्मद शाह, अहमद शाह, आलमगीर द्वितीय, शाहआलम द्वितीय, अकबर द्वितीय एवं बहादुर शाह द्वितीय	206 – 211
30	मुगलकालीन प्रशासन	212 – 215
31	मनसबदारी व्यवस्था	216 – 218
32	जागीरदारी व्यवस्था	218 – 219
33	जमींदारी व्यवस्था	220
34	सैन्य व्यवस्था	221
35	न्याय व्यवस्था	222 – 223
36	भू–राजस्व व्यवस्था	224 – 226
37	अर्थव्यवस्था	227 – 229
38	सामाजिक जीवन	229 – 233
39	धार्मिक नीति	234 – 242
40	राजपूत नीति	243 – 247
41	मुगल संस्कृति : स्थापत्य कला या वास्तुकला, चित्रकला, संगीत कला, उद्यान या बाग–बगीचे एवं शिक्षा व्यवस्था	248 – 260
42	साहित्य	261 – 266
43	विदेशी यात्री	267 – 270

160/4 - A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)
e-mail : aakarias2014@gmail.com ; **Website :** www.aakarias.com
CONTACT : 9713300123, 6262856797, 6262856798

इस्लाम का उदय

'इस्लाम' अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है – अल्लाह के प्रति समर्पण। इस्लाम का उदय मक्का (सऊदी अरब) में हुआ था।

❒ हजरत मुहम्मद पैगम्बर

इस्लाम धर्म के संस्थापक 'हजरत मुहम्मद पैगम्बर' थे, जिनका जन्म 570 ई. में मक्का में हुआ था। हजरत मुहम्मद का बचपन का नाम 'अल अमीन' था। कुरान में उन्हें 'मुहम्मद' एवं 'अहमद' के नाम से पुकारा गया है।

हजरत मुहम्मद के पिता 'अब्दुल्ला' की मृत्यु उनके जन्म से पहले ही हो चुकी थी, जबकि माता 'अमीना' की मृत्यु तब हो गई थी, जब हजरत मुहम्मद की उम्र मात्र 06 वर्ष थी। फलस्वरूप हजरत मुहम्मद का लालन–पालन उनके चाचा 'अबू तालिब' ने किया था। हजरत मुहम्मद का सबसे महत्वपूर्ण विवाह 'खदीजा' नामक विधवा से हुआ था। उनकी एक बेटी 'फातिमा' थी, जिसकी शादी मुहम्मद साहब के भतीजे 'हजरत अली' के साथ हुई थी।

610 ई. में हजरत मुहम्मद को मक्का स्थित 'हीरा' नामक गुफा में देवदूत 'जिबरील' (जिब्राईल) के द्वारा ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। हजरत मुहम्मद ने अपना प्रथम उपदेश अपनी पत्नी 'खदीजा' को दिया था, जो उनकी प्रथम शिष्या भी थी।

जब हजरत मुहम्मद ने अरब में प्रचलित अंधविश्वास एवं मूर्तिपूजा की निंदा की, तो मक्का में उनकी हत्या के प्रयास किए गए। अत: 16 जुलाई 622 ई. में हजरत मुहम्मद मक्का से मदीना चले गए, जिसे हिजरत (स्थानान्तरण) कहा गया। 16 जुलाई 622 ई. से ही 'हिजरी संवत' का आरंभ हुआ।

मदीना में हजरत मुहम्मद को कई लड़ाइयां लड़नी पड़ीं, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण बद्र की लड़ाई (624 ई.) थी। इन लड़ाइयों में हजरत मुहम्मद की विजय हुई तथा मदीना पर उनका अधिकार हो गया। आगे 630 ई. में हजरत मुहम्मद ने मक्का पर भी अधिकार कर लिया। 632 ई. में मदीना में उनका देहांत हो गया।

❒ इस्लाम के 05 स्तंभ

इस्लाम के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त 05 माने गए हैं, जिन पर सम्पूर्ण इस्लाम धर्म आधारित है –

1) **कलमा** – अल्लाह एवं उसके रसूल में विश्वास करना।
2) **नमाज** – दिन में 05 बार की नमाज पढ़ना।
3) **जकात** – स्वेच्छा से दिया गया दान (2.5 प्रतिशत)।
4) **रोजा** – उपवास या व्रत रखना।
5) **हज** – मक्का की यात्रा करना।

❒ कुरान

कुरान इस्लाम धर्म का सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं पवित्र ग्रंथ है। हजरत मुहम्मद को 610 ई. से मृत्युपर्यंत 632 ई. तक ज्ञान की प्राप्ति हुई थी, जिसका ज्ञान उन्होंने अपने अनुयायियों को दिया था। हजरत मुहम्मद की मृत्यु के उपरान्त कुरान का प्रथम संकलन 633 ई. में किया गया था, जबकि कुरान का अंतिम रूप से संकलन 653 ई. में 'जैद इब्न थाबित' के द्वारा किया गया था। मूलरूप से कुरान की रचना अरबी भाषा में हुई थी। कुरान में कुल 114 सुरा (अध्याय) हैं।

खलीफा

'खलीफा' अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है – उत्तराधिकारी। इस्लाम धर्म में हजरत मुहम्मद के उत्तराधिकारी खलीफा कहलाए।

इस्लाम में प्रथम खलीफा 'हजरत अबू बक्र' हुए, जिनके समय राजधानी मदीना (सऊदी अरब) थी। आगे क्रमशः हजरत उमर, हजरत उस्मान (उथमान) तथा हजरत अली खलीफा हुए। हजरत अली ने कूफा (इराक) में राजधानी स्थापित की थी।

प्रथम चार खलीफाओं को 'राशिदुन खलीफा' तथा 'पवित्र खलीफा' कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने इस्लाम के सिद्धान्तों के अनुसार शासन किया था।

राशिदुन खलीफाओं (632–661 ई.) के उपरान्त क्रमशः उमय्यद वंश (661–750 ई.), अब्बासी वंश (750–1517 ई.) तथा ऑटोमन वंश या उस्मानी वंश (1517–1924 ई.) के खलीफाओं ने शासन किया, जिनके समय राजधानी क्रमशः दमिश्क (सीरिया), बगदाद (इराक) तथा काहिरा (मिस्र) थी।

03 मार्च 1924 ई. में तुर्की के प्रथम राष्ट्रपति 'मुस्तफा कमाल पाशा' ने अंतिम रूप से खलीफा के पद को समाप्त कर दिया। इस्लाम में अंतिम खलीफा 'अब्दुल मजीद द्वितीय' हुए।

अरब आक्रमण

भारत में प्रथम सफल मुस्लिम या अरब आक्रमण 712 ई. में मुहम्मद-बिन-कासिम के नेतृत्व में सिन्ध के शासक दाहिर के विरुद्ध हुआ था।

सिन्ध में 8वीं सदी में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना ब्राह्मण वंश के राजा 'चाच' के द्वारा की गई थी। चाच का उत्तराधिकारी उसका पुत्र 'दाहिर' हुआ था।

मुहम्मद-बिन-कासिम

- मुहम्मद-बिन-कासिम इराक के सूबेदार अल हज्जाज का दामाद एवं गुलाम था।
- भारत में प्रथम सफल मुस्लिम या अरब आक्रमण 712 ई. में मुहम्मद-बिन-कासिम के नेतृत्व में सिन्ध के शासक दाहिर के विरुद्ध हुआ था।
- यद्यपि इस आक्रमण में मुहम्मद-बिन-कासिम को सफलता प्राप्त हुई, किन्तु वह ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रह सका। शीघ्र ही 715 ई. में खलीफा सुलेमान के आदेश पर मुहम्मद-बिन-कासिम ने आत्महत्या कर ली थी।

❐ जानकारी के स्रोत

712 ई. में सिन्ध पर हुए अरब आक्रमण की जानकारी 'काजी इस्माइल' के द्वारा अरबी भाषा में लिखे गए ग्रंथ 'चचनामा' से प्राप्त होती है। चचनामा का फारसी भाषा में अनुवाद 'अबू बक्र कुफी' के द्वारा 'फतहनामा' नाम से किया गया था।

❐ कारण या उद्देश्य

712 ई. में सिन्ध में हुए अरब आक्रमण का मूल उद्देश्य धन-दौलत लूटना तथा इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार करना था, किन्तु तात्कालिक कारण इराक के सूबेदार हज्जाज के समुद्री जहाज, जो श्रीलंका से इराक वापस आ रहा था, को सिन्ध स्थित देवल में समुद्री लुटेरों द्वारा लूट लिया जाना था।

❐ प्रमुख घटनाएं

हज्जाज ने खलीफा अल वालिद या अल वलीद की अनुमति से अपने दामाद एवं गुलाम मुहम्मद-बिन-कासिम के नेतृत्व में सिन्ध सेना भेजी। मुहम्मद-बिन-कासिम ने 712 ई. में सर्वप्रथम सिन्ध स्थित देवल एवं उसके पश्चात् क्रमशः नीरून व सेहवान पर अधिकार स्थापित किया।

20 जून 712 ई. में मुहम्मद-बिन-कासिम ने 'रावर के युद्ध' में दाहिर को पराजित कर मार डाला। यहाँ दाहिर की पत्नी रानाबाई ने जौहर कर लिया। फिर मुहम्मद-बिन-कासिम ने ब्राह्मणाबाद पर आक्रमण कर दाहिर के पुत्र जयसिंह को पराजित किया। आगे चलकर जयसिंह ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। इसके उपरान्त मुहम्मद-बिन-कासिम ने सिन्ध की राजधानी 'अरोर' या 'अरोड़' पर अधिकार स्थापित किया, जो अरबों की सिन्ध में अंतिम विजय थी। मुहम्मद-बिन-कासिम ने 713 ई. में मुल्तान (स्वर्ण नगरी) पर अधिकार स्थापित किया, जो अरबों की भारत में अंतिम विजय थी।

अरबों ने सिन्ध एवं मुल्तान पर 871 ई. तक शासन किया था। इस दौरान अरबों ने सिन्ध में 'मंसूरा' को राजधानी बनाई थी। अरब भारत के अन्य क्षेत्रों पर अधिकार नहीं कर सके। अरब आक्रमणकारियों ने जब भारत के अंदरूनी क्षेत्रों में प्रवेश करने का प्रयास किया, तो उन्हें कश्मीर के कार्कोट वंश के शासक ललितादित्य, कन्नौज के प्रतिहार वंश के शासक नागभट्ट प्रथम तथा बादामी के चालुक्य वंश के शासक पुलकेशिन द्वितीय ने पराजित किया।

❐ प्रभाव या परिणाम

यद्यपि अरब भारत में स्थायी मुस्लिम राज्य स्थापित नहीं कर सके, किन्तु फिर भी अरब आक्रमण के तत्कालीन प्रभाव निम्नलिखित थे -

1) भारत में इस्लाम धर्म का आगमन हुआ।
2) अरबों ने ही भारतीयों के संदर्भ में 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग किया था।
3) अरबों ने ही भारत में ऊँट-पालन एवं खजूर की खेती प्रारंभ की थी।
4) अरबों ने सिन्ध में 'दिरहम' नामक सिक्के का प्रचलन प्रारंभ किया था।
5) सर्वप्रथम मुहम्मद-बिन-कासिम ने भारत में सिन्ध स्थित देवल के हिन्दुओं पर जजिया कर लगाया था।
6) अरबों को भारत से कई लाभ हुए। उन्हें न केवल भारत से धन-दौलत प्राप्त हुई, बल्कि अरब आक्रमणकारी अपने साथ संस्कृत भाषा में लिखित कई पुस्तकें भी ले गए थे, जिनका अरब में अरबी भाषा में अनुवाद किया गया। इससे अरबों को भारतीय ज्ञान प्राप्त हुआ। खलीफा मंसूर के समय ब्रह्मगुप्त के दो ग्रंथ 'ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त' (गणित पर) एवं 'खण्डखाद्यक' (ज्योतिषी एवं खगोलशास्त्र पर) का अरब में अरबी भाषा में अनुवाद 'अलफजारी' के द्वारा किया गया था।
7) डॉ. आशीर्वाद लाल श्रीवास्तव के अनुसार अरबों ने भारतीय ज्ञान विशेषकर दर्शन, ज्योतिष एवं अंकों के ज्ञान को यूरोप में पहुंचाया था। 8वीं एवं 9वीं शताब्दी में यूरोप में जो ज्ञान की ज्योति फैली थी, उसका मुख्य कारण अरबों का भारत से सम्पर्क था।

इस प्रकार यद्यपि भारत पर हुए अरबों के आक्रमण का राजनीतिक प्रभाव नगण्य था, किन्तु संस्कृति एवं सभ्यता की दृष्टि से वह अरबों के अलावा संसार के अन्य देशों के लिए भी लाभदायक सिद्ध हुआ।

तुर्क आक्रमण

तुर्क मूलरूप से ईरानी थे, जो अरब आक्रमण के समय तुर्कमेनिस्तान भाग आए थे।

❐ अलप्तगीन (962-963 ई.)

तुर्क सरदार अलप्तगीन ने 962 ई. में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की एवं गजनी (अफगानिस्तान) को अपनी राजधानी बनाई। अलप्तगीन के पश्चात् क्रमशः इस्हाक, बलक्तगीन, पीराई तथा सुबुक्तगीन शासक हुए।

❐ सुबुक्तगीन (977-997 ई.)

977 ई. में सुबुक्तगीन शासक बना, जो अलप्तगीन का गुलाम एवं दामाद था। सुबुक्तगीन यमीनी वंश (यामिनी वंश) का तुर्क था। आगे चलकर 'यमीनी वंश' को 'गजनवी वंश' के नाम से भी जाना गया।

हिन्दूशाही वंश के शासक जयपाल ने सुबुक्तगीन के राज्य पर आक्रमण किया, किन्तु जयपाल की पराजय हुई और उसे विवश होकर संधि करनी पड़ी। जब जयपाल ने संधि के अनुसार युद्ध हर्जाना नहीं दिया, तो 986-87 ई. में सुबुक्तगीन ने हिन्दूशाही राज्य पर आक्रमण कर कुछ भू-भाग को जीतने में सफलता पाई। इस प्रकार भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम तुर्क सुबुक्तगीन था।

997 ई. में सुबुक्तगीन की मृत्यु हो गई और गजनी व हिन्दूशाही राज्य के मध्य प्रारंभ हुए संघर्ष का कोई निश्चित परिणाम निकलकर सामने नहीं आया। सुबुक्तगीन ने मृत्यु से पूर्व अपने छोटे पुत्र इस्माइल को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था, किन्तु शीघ्र ही 998 ई. में सुबुक्तगीन के बड़े पुत्र महमूद गजनवी ने इस्माइल की हत्या कर राजगद्दी प्राप्त कर ली।

महमूद गजनवी : 998-1030 ई.

महमूद गजनवी का जन्म 971 ई. में गजनी में हुआ था। महमूद गजनवी ने मध्य-एशिया में एक विस्तृत साम्राज्य स्थापित किया था तथा खलीफा से गजनी में शासन करने हेतु खिलअत प्राप्त की थी। इससे खुश होकर खलीफा 'अल कादिर बिल्लाह' ने महमूद गजनवी को 'यमीन-उद्-दौला' (साम्राज्य की दाहिनी भुजा) तथा 'अमीन-उल-मिल्लत' (मुसलमानों का संरक्षक) की उपाधि दी थी। इसी मौके पर महमूद गजनवी ने खलीफा से वादा किया था कि वह जब तक जीवित रहेगा काफिरों के देश में आक्रमण करेगा।

❐ उद्देश्य

महमूद गजनवी द्वारा भारत पर किए गए आक्रमणों के निम्नलिखित उद्देश्य थे -

1) धन-दौलत प्राप्त करना।
2) इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार करना।
3) साम्राज्य विस्तार करना।

❐ प्रमुख आक्रमण

सर हेनरी इलियट के अनुसार महमूद गजनवी ने भारत पर 17 आक्रमण किए थे, जिनमें से प्रमुख आक्रमण निम्नलिखित थे -

- **पहला आक्रमण -** 1000 ई. में महमूद गजनवी हिन्दूशाही राज्य के सीमावर्ती क्षेत्र पर स्थित कुछ दुर्गों को जीतकर गजनी लौट गया।

हिन्दूशाही राज्य

- हिन्दूशाही राज्य का विस्तार चिनाब नदी से लेकर हिन्दूकुश पर्वतमाला तक था।
- हिन्दूशाही राज्य अफगानिस्तान के काबुल व लगमान, पाकिस्तान के पेशावर और भारत के कश्मीर व पंजाब प्रांत तक विस्तृत था।
- हिन्दूशाही राज्य की राजधानी पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में स्थित 'वैहिन्द' थी, जिसे 'ओहिन्द' और 'उदभाण्ड' के नाम से भी जाना जाता था।
- इस राज्य की स्थापना एक ब्राह्मण मंत्री 'कल्लार' के द्वारा की गई थी।
- कल्लार का उत्तराधिकारी 'जयपाल' हुआ, जिसने महमूद गजनवी से पराजित होने के उपरान्त आत्महत्या कर ली थी।
- जयपाल के उत्तराधिकारी क्रमशः 'आनंदपाल', 'त्रिलोचनपाल' तथा 'भीमपाल' हुए। ये सभी महमूद गजनवी से पराजित हुए थे।
- महमूद गजनवी के निरन्तर आक्रमणों से हिन्दूशाही राज्य की स्थिति कमजोर हो गई और 1026 ई. में हिन्दूशाही राज्य का अंत हो गया।

- **दूसरा आक्रमण** – 1001 ई. में महमूद गजनवी ने हिन्दूशाही वंश के शासक जयपाल को पेशावर के नजदीक पराजित कर पेशावर और वैहिन्द पर अधिकार कर लिया। जयपाल अपने संबंधियों सहित बंदी बना लिया गया। हालांकि जयपाल ने महमूद गजनवी को 25 हाथी और 2,50,000 दीनार देकर मुक्ति पाई, लेकिन अपनी निरंतर पराजय से अपमानित महसूस करते हुए जयपाल ने आत्मदाह कर लिया।
- **छठवाँ आक्रमण** – 1009 ई. में महमूद गजनवी ने नगरकोट (कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश) पर भी आक्रमण कर लूटमार की।
- **सातवाँ आक्रमण** – 1009 ई. में ही महमूद गजनवी ने नारायणपुर (अलवर, राजस्थान) पर आक्रमण कर लूटमार की।
- **नवमाँ आक्रमण** – 1014 ई. में महमूद गजनवी ने हरियाणा के थानेश्वर पर आक्रमण कर 'चक्रस्वामी मंदिर' को लूटा।
- **बारहवाँ आक्रमण** – 1018 ई. में महमूद गजनवी ने 'मंदिरों की नगरी' नाम से प्रसिद्ध मथुरा पर आक्रमण कर लूटमार की।
- **तेरहवाँ आक्रमण** – 1018 ई. में महमूद गजनवी ने वृंदावन के मंदिरों और कन्नौज पर आक्रमण कर लूटमार की। कन्नौज का शासक राज्यपाल बिना युद्ध किए ही भाग गया।

  महमूद गजनवी के वापस जाने के उपरान्त कालिंजर के चंदेल वंशीय राजा विद्याधर ने ग्वालियर के राजा के सहयोग से राज्यपाल पर आक्रमण कर उसे मौत के घाट उतार दिया। उसकी दृष्टि में राज्यपाल ने मथुरा और वृन्दावन जैसे तीर्थस्थानों को लूटने वाले महमूद से बिना युद्ध किए हुए भागकर एक बड़ा अपराध किया था।
- **चौदहवाँ आक्रमण** – 1020 ई. में महमूद गजनवी ने कालिंजर के चंदेल वंश के शासक विद्याधर पर आक्रमण किया। यद्यपि चंदेलों की सैन्य शक्ति से महमूद गजनवी भयभीत हुआ था, किन्तु एका-एक विद्याधर रात्रि में पलायन कर गया। अतः महमूद गजनवी कालिंजर में कुछ लूटमार कर वापस लौट गया।
- **पंद्रहवाँ आक्रमण** – 1021 ई. में महमूद गजनवी ने चन्देल वंश के शासक विद्याधर के दुर्ग कलिंजर पर आक्रमण किया, किन्तु महमूद गजनवी विद्याधर को पराजित नहीं कर सका। अन्ततः विद्याधर ने महमूद गजनवी से सन्धि कर ली, जिसके अनुसार महमूद गजनवी को 15 दुर्ग और अत्यधिक धन-संपत्ति प्राप्त हुई। इस प्रकार भारत का एकमात्र राजपूत शासक विद्याधर था, जो महमूद गजनवी से पराजित नहीं हुआ था।
- **सोलहवाँ आक्रमण** – 1025 ई. में महमूद गजनवी ने गुजरात की राजधानी 'अन्हिलवाड़ा' पर आक्रमण किया। उस समय वहाँ चालुक्य या सोलंकी वंश के 'भीमदेव प्रथम' का शासन था। भीमदेव प्रथम बिना युद्ध किए भाग गया।

  1025 ई. में ही महमूद गजनवी ने गुजरात के काठियावाड़ स्थित सोमनाथ के मंदिर पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया। सोमनाथ के शिवलिंग के टूटे हुए टुकड़ों को गजनी की जामा मस्जिद की सीढ़ियों में लगा दिया गया। धन की दृष्टि से यह सर्वाधिक सफल अभियान था।
- **सत्रहवाँ आक्रमण** – 1027 ई. में महमूद गजनवी ने भारत में अंतिम आक्रमण सिन्ध के जाटों के विरूद्ध किया। जब महमूद गजनवी सोमनाथ को लूटकर गजनी वापस जा रहा था, तब सिन्ध के जाटों ने उसे तंग किया था। जाटों को दंडित करने के लिए महमूद गजनवी ने उनके राज्य पर आक्रमण कर लूटमार की।

❐ प्रमुख उपाधियां

महमूद गजनवी को 'आजम का प्रथम सुल्तान' माना जाता है। तारीख-ए-गुजीदा के अनुसार महमूद गजनवी ने सीस्तान के शासक खलफ-बिन-अहमद को पराजित करने के उपरान्त सुल्तान की उपाधि धारण की थी। महमूद गजनवी ने 'गाजी' (विधर्मियों का कत्ल करने वाला) तथा 'बुतशिकन' (मूर्ति भंजक) की उपाधि भी धारण की थी।

❐ सांस्कृतिक उपलब्धियां

महमूद गजनवी ने गजनी के दरबार में कई विद्वानों को संरक्षण दिया था। किताब-उल-यमीनी (तारीख-ए-यमीनी) का रचियता उत्बी महमूद गजनवी का दरबारी इतिहासकार था। किताब-उल-हिन्द या तारीख-ए-हिन्द या तहकीक-ए-हिन्द का रचियता अलबरूनी भी महमूद गजनवी का दरबारी था। अलबरूनी महमूद गजनवी के आक्रमण के दौरान ही भारत आकर बस गया था।

शाहनामा का रचियता फिरदौसी भी महमूद गजनवी का समकालीन था। तारीख-ए-सुबुक्तगीन का रचियता बैहाकी (पूर्वी पेप्स-लेनपूल), खुरासान का विद्वान तुसी, फारस का कवि उजारी, महान शिक्षक उन्सूरी, दर्शनशास्त्र का विद्वान फराबी, अस्जदी, फर्रूखी आदि महमूद गजनवी के दरबारी विद्वान थे।

महमूद गजनवी ने गजनी में विश्वविद्यालय, पुस्तकालय, अजायबघर एवं जामा मस्जिद का निर्माण करवाया था। उसने नवार नदी पर बाढ़-ए-सुल्तान नामक बांध भी बनवाया था।

भारत के मुस्लिम शासकों में सर्वप्रथम महमूद गजनवी ने भारतीय ढंग के सिक्के तथा संस्कृत लेख युक्त सिक्के जारी किए थे। महमूद गजनवी ने पंजाब में चाँदी के ऐसे सिक्के जारी किए थे, जिन पर घुड़सवार व नंदी की आकृति उत्कीर्ण थी और संस्कृत भाषा व देवनागरी लिपि में 'अव्यक्तमेकं अवतार महमूद' अंकित था।

❐ मृत्यु

1030 ई. में क्षय रोग की वजह से महमूद गजनवी की मृत्यु हो गई।

❐ प्रभाव या परिणाम

महमूद गजनवी द्वारा भारत पर किए गए के आक्रमण के निम्नलिखित प्रभाव थे -

1) तुर्कों को भारत से अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई, जिसका उपयोग मध्य-एशिया में मुस्लिम साम्राज्य के विस्तार में किया जा सका।
2) भारत में इस्लाम धर्म का प्रसार हुआ।
3) अफगानिस्तान, मुल्तान और पंजाब के प्रदेशों में गजनवी वंश का राज्य स्थापित हुआ।
4) महमूद गजनवी के आक्रमण के दौरान अलबरूनी भारत आया, जिसके द्वारा लिखी गई पुस्तक किताब-उल-हिन्द से तत्कालीन भारत की राजनीतिक एवं सामाजिक जानकारी प्राप्त होती है।
5) भारत के सीमावर्ती शासकों की स्थिति कमजोर हो गई। इससे आगे चलकर इन राज्यों के विरुद्ध मुहम्मद गोरी को सफलता प्राप्त हो सकी तथा भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना हुई।

मुइजुद्दीन मुहम्मद गोरी : 1192-1206 ई.

❐ पृष्ठभूमि

1030 ई. में महमूद गजनवी की मृत्यु के पश्चात् उसके द्वारा स्थापित विशाल साम्राज्य का विभाजन हो गया। गजनी प्रदेश पर तो यमीनी वंश या गजनवी वंश का ही शासन रहा, परन्तु गोर प्रदेश पर तुर्कों की गुंज शाखा (शंसबनी वंश) का अधिकार हो गया। जब गोर का शासक अलाउद्दीन हुआ, तो उसने गजनी को 07 दिनों तक जलाया, जिसके कारण उसे 'जहाँसोज' कहा गया।

1163 ई. में अलाउद्दीन का चचेरा भाई गियासुद्दीन गोर का शासक बना। 1173 ई. में गियासुद्दीन ने गजनी प्रदेश पर भी अधिकार कर लिया, किन्तु गियासुद्दीन ने तुर्क जनजातीय परंपरा का पालन करते हुए अपने छोटे भाई मुइजुद्दीन मुहम्मद गोरी को गजनी प्रदेश का शासक नियुक्त किया।

❐ मुहम्मद गोरी का भारत की ओर अभियान

मुहम्मद गोरी का मूल नाम 'शिहाबुद्दीन' था। मुहम्मद गोरी ने अपनी सारी शक्ति भारतीय क्षेत्र की तरफ प्रसार में लगाई, जबकि गियासुद्दीन का ध्यान पश्चिम एवं मध्य-एशिया की तरफ ही केन्द्रित रहा।

मुहम्मद गोरी ने सर्वप्रथम 1175 ई. में शिया मुसलमान करमातियों या करमाथियों से मुल्तान जीता। 1178-79 ई. में मुहम्मद गोरी ने गुजरात के नेहरवाला पर चढ़ाई की, परन्तु वह आबु पर्वत के निकट 'काशह्द के युद्ध' में गुजरात के चालुक्य वंशीय शासक भीमदेव द्वितीय (मूलराज द्वितीय) की सेना से पराजित हुआ। माना जाता है कि इस युद्ध में भीमदेव द्वितीय की सेना का नेतृत्व उसकी माँ नायिका देवी कर रही थी। यह भारत में मुहम्मद गोरी की प्रथम पराजय थी।

तत्पश्चात् मुहम्मद गोरी ने पंजाब के रास्ते भारत में अभियान करने का निर्णय लिया। उस समय लाहौर एवं पंजाब में गजनवी वंश के अंतिम शासक मलिक खुसरव का अधिकार था। 1186 ई. तक मुहम्मद गोरी ने लाहौर एवं पंजाब पर आक्रमण कर मलिक खुसरव को कैद कर लिया। इस प्रकार संपूर्ण लाहौर एवं पंजाब पर मुहम्मद गोरी का अधिकार हो गया और गजनवी का राजवंश समाप्त हो गया।

1189 ई. में जब मुहम्मद गोरी ने सीमावर्ती किले भटिण्डा पर आक्रमण करके उसे जीत लिया, तो अजमेर तथा दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध अनिवार्य हो गया।

पृथ्वीराज चौहान अजमेर तथा दिल्ली के प्रतापी शासक थे। उन्होंने चंदेल वंश के शासक परमार्दिदेव पर आक्रमण कर पराजित किया था। इनके मध्य हुए युद्ध में चंदेलों के सेनानायक आल्हा और ऊदल नामक दो भाई मारे गए थे। पृथ्वीराज चौहान का विवाद कन्नौज के गहड़वाल या राठौर वंश के शासक जयचंद से भी था। पृथ्वीराज चौहान ने जयचंद की पुत्री संयोगिता का अपहरण कर लिया था। पृथ्वीराज चौहान ने गुजरात पर भी आक्रमण किया था, परन्तु वह भीमदेव द्वितीय से पराजित हुआ था।

पृथ्वीराज चौहान (रायपिथौरा)

- पृथ्वीराज चौहान का मूल नाम पृथ्वीराज तृतीय था।
- पृथ्वीराज चौहान के पिता सोमेश्वर चौहान एवं माता कर्पूरदेवी थीं।
- सोमेश्वर चौहान की अन्य पत्नी कमलादेवी दिल्ली के शासक अनंगपाल तोमर (बिलानदेव) की पुत्री थी। इस प्रकार अनंगपाल तोमर पृथ्वीराज चौहान के नाना थे।
- अनंगपाल तोमर का कोई पुत्र नहीं था, इसलिए अपनी मृत्यु से पूर्व ही अनंगपाल तोमर ने पृथ्वीराज चौहान को दिल्ली का युवराज घोषित कर दिया था।
- 1166 ई. में अनंगपाल तोमर की मृत्यु के पश्चात् दिल्ली का क्षेत्र अजमेर के अधीन हो गया तथा 1178 ई. में सोमेश्वर चौहान की मृत्यु के पश्चात् इन दोनों क्षेत्रों पर पृथ्वीराज चौहान का अधिकार हो गया था।

❒ तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)

पंजाब एवं लाहौर को जीतने के पश्चात् मुहम्मद गोरी के राज्य की सीमाएं दिल्ली और अजमेर के शासक पृथ्वीराज चौहान के राज्य की सीमाओं से मिलने लगी, जिससे दोनों के मध्य युद्ध अनिवार्य हो गया। दोनों के मध्य 1191 ई. में आधुनिक हरियाणा स्थित तराइन के मैदान में युद्ध हुआ, जिसे तराइन के प्रथम युद्ध के नाम से जाना जाता है।

तराइन के प्रथम युद्ध का मुख्य कारण 1189 ई. में मुहम्मद गोरी द्वारा तबरहिन्द (भटिण्डा) पर अधिकार कर लेना था। पृथ्वीराज चौहान एवं मुहम्मद गोरी के मध्य हुए इस युद्ध में मुहम्मद गोरी की पराजय हुई तथा वह पंजाब की ओर लौट गया।

❒ तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)

❖ युद्ध के कारण

1) **गोरी का साम्राज्यवादी उद्देश्य** – मुहम्मद गोरी के आक्रमण का प्रमुख उद्देश्य पंजाब पर अधिकार करना था। उस समय पंजाब पर गजनवी वंश के मलिक खुसरव का अधिकार था। चूंकि महमूद गजनवी के वंशजों के साथ गोर के शंसबनी वंश की प्रतिद्वन्दिता थी, इसलिए मुहम्मद गोरी गजनवी शासकों का पूर्ण विनाश कर पंजाब पर अधिकार करना चाहता था।
2) **धन प्राप्ति की आकांक्षा** – भारत की धन-संपत्ति ने विदेशी आक्रांताओं को हमेशा आकर्षित किया था। अत: गोरी की भारत से धन-दौलत प्राप्ति की इच्छा भी इस युद्ध का एक कारण था।
3) **इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार** – मुहम्मद गोरी ने नव-प्रवर्तित इस्लाम धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु भी भारत की ओर रुख किया था।
4) **तराइन के प्रथम युद्ध में मिली पराजय का बदला** – मुहम्मद गोरी 1191 ई. में तराइन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान की सेना से पराजित हुआ था। अत: वह तराइन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को पराजित कर बदला लेना चाहता था।

1192 ई. में मुहम्मद गोरी ने 1 लाख 20 हजार अश्वारोही सेना के साथ पुन: भारत पर आक्रमण कर तराइन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को पराजित किया।

पृथ्वीराज चौहान के अंतिम जीवन के विषय में मतभेद है। मिन्हाज-उस-सिराज के अनुसार पृथ्वीराज चौहान की तत्काल हत्या कर दी गई थी। पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि चंद्रबरदाई की पुस्तक पृथ्वीराज रासो के अनुसार पृथ्वीराज चौहान को गजनी ले जाया गया, जहाँ पृथ्वीराज चौहान ने शब्द-भेदी बाण चलाकर मुहम्मद गोरी की हत्या कर दी थी। तत्पश्चात् मुहम्मद गोरी के सैनिकों ने पृथ्वीराज चौहान की हत्या कर दी थी।

हसन निजामी का विचार अधिक सत्य प्रतीत होता है, जिसके अनुसार पृथ्वीराज चौहान को अजमेर ले जाया गया, जहाँ उसने मुहम्मद गोरी के अधीनस्थ शासक के रूप में कुछ दिनों तक शासन किया, परन्तु आगे विद्रोह करने पर उसकी हत्या कर दी गई। इस मत की पुष्टि मुद्रा विषयत प्रमाण से भी होती है। भारत में मुहम्मद गोरी के कुछ ऐसे सिक्के प्राप्त हुए हैं, जिनके एक तरफ नन्दी की आकृति तथा देवनागरी लिपि में पृथ्वीराज लिखा है, जबकि दूसरी तरफ घोड़े की आकृति तथा मुहम्मद बिन साम उत्कीर्ण है।

❐ तुर्कों की विजय या राजपूतों की पराजय के कारण

यह तथ्य अत्यंत आश्चर्यजनक है कि आखिर कैसे 2000 वर्ष पुरानी सभ्यता एवं संस्कृति वाले देश, जहाँ चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, हर्षवर्धन जैसे योग्य व विजेता शासकों ने राज्य किया हो, मुस्लिम शक्ति के समक्ष इस प्रकार बिखर गया, जैसे उसमें प्रतिरोध शक्ति का पूर्णत: अभाव हो। इसे समझने के लिए राजपूतों के पराजय का विस्तृत विश्लेषण आवश्यक है –

❖ विभिन्न विद्वानों के विचार

1) फख्र–ए–मुदब्बिर ने राजपूतों की पराजय हेतु तुर्क अश्वारोही सेना की गतिशीलता को उत्तरदायी माना है।
2) हसन निजामी एवं मिन्हाज–उस–सिराज ने राजपूतों की पराजय के पीछे तुर्कों के पक्ष में दैवी कृपा को महत्वपूर्ण माना है।
3) एलफिंसटन के अनुसार तुर्क सैनिक अधिक लड़ाकू एवं युद्ध प्रिय थे, इसलिए वे राजपूतों के विरूद्ध सफल हुए।
4) लेनपूल एवं विंसेन्ट स्मिथ ने तुर्कों की विजय हेतु उनका मांसाहारी व ठंडे प्रदेशों का निवासी होना सम्बन्धी कारण बताए हैं।
5) यदुनाथ सरकार के अनुसार इस्लाम के 03 सद्‌गुणों ने मुस्लिम विजय को सुनिश्चित किया –
   - i) समानता आधारित भाईचारा।
   - ii) मद्यपान निषेध।
   - iii) एक अल्लाह में विश्वास, जिससे तुर्क सैनिक मृत्यु भय से मुक्त होकर युद्ध करते थे।

यद्यपि ये समस्त मत रोचक हैं, लेकिन सर्वमान्य नहीं। राजपूत सैनिक भी तुर्कों से कम लड़ाकू या युद्ध प्रिय नहीं थे। मगध की स्थापना से लेकर दिल्ली सल्तनत तक का भारतीय इतिहास युद्धों का इतिहास रहा है। उसी प्रकार राजपूतों में भी मांसाहार प्रचलित था। फिर यह तथ्य भी इतिहास विरोधी है कि तुर्कों की विजय का कारण उनका ठंडे प्रदेशों का निवासी होना था, क्योंकि गोरी की सेना भारत में दो बार क्रमश: भीमदेव द्वितीय एवं पृथ्वीराज चौहान से पराजित हो चुकी थी। साथ ही तुर्क कभी भी सामाजिक भाईचारा से पूर्णत: एकजुट नहीं रहे, न तो उन्होंने अपना कार्य अल्लाह के भरोसे छोड़ा और न ही मद्यपान को पूर्णत: तिलांजलि दे पाए।

अत: भारतीयों की पराजय के कारण उनके व्यक्तिगत आचरण में नहीं, बल्कि उनकी राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सैन्य संरचना में निहित थे।

❖ राजपूतों की पराजय के वास्तविक कारण

1) **राजनीतिक कारण** – इसे निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत समझा जा सकता है –
   - i) **राजनीतिक विकेन्द्रीकरण** – हर्षवर्धन के पश्चात उत्तरी भारत में कई क्षेत्रीय राजपूत राज्यों का उदय हुआ था, जो साम्राज्य विस्तार हेतु हमेशा युद्धरत् रहते थे तथा अपनी सैन्य शक्ति का ह्रास करते रहते थे। उनमें राजनीतिक एकता का अभाव था। अत: राजपूतों ने गोरी के विरूद्ध कोई संयुक्त मोर्चा बनाने का प्रयास नहीं किया।
   - ii) **आपसी फूट** – विदेशी आक्रान्ताओं के समक्ष राजपूतों की असफलता का मुख्य कारण उनमें आपसी फूट का होना था। पारस्परिक फूट के कारण क्षेत्रीय राजाओं द्वारा कई बार विदेशियों का साथ भी दिया गया। उदाहरणार्थ – तराइन के द्वितीय युद्ध में कन्नौज के शासक जयचंद ने मुहम्मद गोरी को सहयोग किया था।
   - iii) **सीमांत क्षेत्र की सुरक्षा की उपेक्षा** – उत्तरी भारत के शासकों ने सीमावर्ती क्षेत्र की सुरक्षा हेतु कोई गंभीर प्रयास नहीं किए। महमूद गजनवी के आक्रमण के समय इस क्षेत्र की सुरक्षा का दायित्व हिन्दूशाही वंश के शासकों पर, जबकि मुहम्मद गोरी के आक्रमण के समय यह दायित्व परवर्ती कमजोर गजनवी वंश के शासकों पर था, जो कि इस कार्य में पूरी तरह असमर्थ थे। इसके विपरीत तुर्क साम्राज्यवादी प्रसार हेतु दृढ़ संकल्पित थे।

2) **आर्थिक कारण** – सामन्ती प्रथा के कारण भू-राजस्व से प्राप्त आमदनी केन्द्रीय राजा के साथ-साथ अनेक सामन्तों के बीच विभाजित हो जाती थी। परिणामस्वरूप केन्द्र एक शक्तिशाली सैनिक संगठन का निर्माण नहीं कर सका। इसके विपरीत तुर्क एक ही केन्द्रीय सत्ता के अधीन थे तथा उनमें भारत की धन-सम्पदा प्राप्त करने हेतु अधिक उत्साह था।

3) **सामाजिक कारण** – तत्कालीन भारतीय समाज कई जाति-वर्णों में विभाजित था। सामाजिक बंधनों के कारण सैनिक सेवा के दरवाजे केवल उच्च वर्ण के लिए खुले थे। इस सामाजिक विभेद के दो नकारात्मक पक्ष थे – जहाँ एक ओर उच्च वर्ण के कुछ अयोग्य व्यक्ति सैनिक सेवा में आ जाते थे, वहीं दूसरी ओर निम्न वर्ण के कुछ योग्य व्यक्तियों की सैन्य सेवाएं राज्य को प्राप्त नहीं हो पाती थी। अलबरूनी ने भी लिखा है कि सामाजिक रूप से शोषित अधिकांश जनता युद्ध से स्वयं को अलग रखती थी। इसके विपरीत सामाजिक विभेद से मुक्त तुर्क युद्ध में एकजुट होकर लड़ते थे।

4) **धार्मिक कारण** – धर्म पर अत्यधिक आस्था रखने के कारण राजपूत नियतिवादी होते थे तथा युद्ध में मिली असफलता या सफलता को पूर्व निश्चित मानते थे। इस प्रकार वे न तो पराजय के कारणों पर विचार करते थे और न ही युद्ध भूमि में कूटनीति व छल-कपट का सहारा लेते थे। इसके विपरीत तुर्क एक ही अल्लाह में विश्वास करने के कारण सामाजिक एकता के सूत्र से बंधे थे। राजपूतों के विपरीत तुर्क शासकों के दृष्टिकोण में भी अन्तर था। वे पराजय से हतोत्साहित न होकर हार के कारणों को समझने एवं उनका निदान करने का प्रयास करते थे।

5) **सैनिक कारण** – सामन्ती प्रथा ने राजपूतों के सैन्य संगठन को अत्यधिक कमजोर कर दिया था। मुख्यत: हस्ति सेना पर निर्भर होने के कारण राजपूतों की सेना में गतिशीलता की कमी थी। यद्यपि राजपूत सेना में अश्वारोही सेना भी होती थी, परन्तु तुर्कमान घोड़े कठिन परिस्थितियों में प्रशिक्षण प्राप्त करते थे। अत: वे भारतीय घोड़ों की तुलना में अधिक कार्य कुशल व तीव्र थे। तुर्क चमड़े की जीन का, जबकि भारतीय चमड़े को अपवित्र मानकर कपड़े या बोरे की जीन का प्रयोग करते थे। उसी प्रकार तुर्कों द्वारा प्रयोग की जाने वाली रकाब अधिक मजबूत व सुविधाजनक होती थी। इससे जहाँ तुर्क सैनिक दौड़ते हुए घोड़े पर खड़े होकर शत्रु पर प्रहार कर सकते थे, वहीं भारतीय सैनिक ऐसा करने में असमर्थ थे।

तुर्क घोड़ों में लोहे की नाल का प्रयोग होता था, जबकि भारतीय घोड़ों में नाल का प्रयोग न करने के कारण युद्ध में उनके घायल होने एवं मरने की संभावना अधिक होती थी। तुर्क सैनिकों द्वारा लोहे के कवच का प्रयोग किया जाता था। अत: वे भारतीय सैनिकों की तुलना में अधिक सुरक्षित होते थे।

तुर्क सैनिकों के अस्त्र-शस्त्र भारतीय सैनिकों की तुलना में अधिक कारगर थे। नावक नामक तुर्क धनुष से लक्ष्य पर सटीक निशाना लगाया जा सकता था। तुर्कों की तलवारें भी हलकी होने के कारण सैनिकों हेतु सुविधाजनक थी। तुर्कों द्वारा जलते हुए तीरों का भी प्रयोग किया जाता था, जो राजपूत सेना में हाथियों को आतंकित करने में सहायक होते थे।

6) **राजपूत सैन्य-पद्धति के दोष** – राजपूत बिना मितव्ययता के सिद्धान्त का पालन किए अपनी सम्पूर्ण सैन्य शक्ति का एक ही बार में प्रयोग करते थे। उनके सैन्य संगठन में आरक्षित सेना का अभाव था। राजपूत धर्म-युद्ध पर विश्वास करते थे तथा युद्ध में विजय हेतु कूटनीति का प्रयोग नहीं करते थे। इसके विपरीत मुहम्मद गोरी ने आरक्षित सेना एवं कूटनीति का सफल प्रयोग किया। यही कारण था कि गोरी को राजपूतों के विरूद्ध सफलता मिली।

❖ निष्कर्ष

इस प्रकार नवीन सैन्य तकनीकी व कूटनीतिक चालों से युक्त और धार्मिक एकता व समानता के सिद्धान्तों से एकजुट आक्रामक तुर्क सेना के समक्ष राजपूत सैनिक व्यक्तिगत रूप से योद्धा होते भी राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व धार्मिक बुराइयों तथा पुरानी पड़ चुकी स्त्रातेजिक व सामरिकी के कारण अन्तत: पराजित हुए।

❒ प्रभाव या परिणाम

मुहम्मद गोरी के आक्रमण के परिणामों को 02 भागों में विभाजित कर समझा जा सकता है –

1) नकारात्मक परिणाम।

2) सकारात्मक परिणाम।

❖ नकारात्मक परिणाम

तराइन के द्वितीय युद्ध में 10,000 से अधिक राजपूत सैनिक मारे गए। इस युद्ध के पश्चात राजपूतों की सैन्य शक्ति पूर्णत: नष्ट हो गई तथा हिन्दू सैन्य-पद्धति का पतन हो गया।

❖ सकारात्मक परिणाम

मुहम्मद गोरी के आक्रमण के सकारात्मक परिणाम अधिक महत्वपूर्ण हैं। इन्हें पुन: तात्कालिक एवं दीर्घकालिक प्रभावों के रूप में देखा जा सकता है। तात्कालिक प्रभाव राजनीतिक, प्रशासनिक व आर्थिक क्षेत्र में प्रकट हुए, जबकि दीर्घकालिक प्रभाव सामाजिक, सांस्कृतिक व तकनीकी क्षेत्र में प्रकट हुए।

1) **तात्कालिक प्रभाव** – राजनीतिक क्षेत्र में तुर्क विजय के पश्चात् भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना हुई, जिसे दिल्ली सल्तनत के नाम से जाना गया। मुस्लिम शासन के अन्तर्गत उत्तरी भारत में राजनीतिक एकता की स्थापना हुई। तुर्क शासकों ने कुछ नवीन राजनीतिक संस्थाओं एवं परम्पराओं को जन्म दिया। उदाहरणार्थ – इक्तादारी व्यवस्था।

   प्रशासनिक क्षेत्र में मुस्लिम राज्य की स्थापना के साथ विकेन्द्रीकृत शासन प्रणाली के स्थान पर निरंकुश राजतंत्र और अतिकेन्द्रीकृत शासन प्रणाली की स्थापना हुई।

   आर्थिक क्षेत्र में नवीन भू-राजस्व पद्धति तथा नहर सिंचाई के विकास के परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन को प्रोत्साहन मिला। सामन्ती प्रथा की समाप्ती के साथ आन्तरिक वाणिज्य-व्यापार का विकास हुआ। नवीन तकनीकी (चरखा) के आगमन से वस्त्र उद्योग में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ।

   साथ ही नवीन मुद्रा प्रणाली अस्तित्व में आई। आर्थिक क्षेत्र में हुई समृद्धि के परिणामस्वरूप नगरीकरण को भी प्रोत्साहन मिला। नगरों के पुनरोद्धार के कारण ही मुहम्मद हबीब ने तुर्कों के आगमन को उत्तरी भारत में 'नगरी क्रांति' की संज्ञा दी है।

2) **दीर्घकालिक प्रभाव** – भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना के परिणामस्वरूप सामाजिक क्षेत्र में भी कुछ सकारात्मक परिवर्तन हुए। चूंकि हिन्दू वर्णाश्रम व्यवस्था में निम्न वर्ग की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। अत: जब निम्न वर्ग ने इस्लाम धर्म को स्वीकार करना प्रारंभ किया, तो भारतीय जाति व्यवस्था के विरूद्ध भक्ति आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। भक्ति आन्दोलन ने हिन्दू समाज की कुप्रथाओं एवं अन्धविश्वासों पर गंभीर चोट की।

   सांस्कृतिक क्षेत्र में हिन्दू त्राबियत शैली तथा मुस्लिम अरकुएट शैली के समन्वय से एक नवीन इण्डो-इस्लामिक स्थापत्य शैली का विकास हुआ। साथ ही मुस्लिम शासकों के द्वारा भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में भी योगदान दिया गया। उर्दू भाषा का विकास सल्तनत काल में ही हुआ था।

   नवीन तकनीकी एवं प्रोद्यौगिकी के आगमन से भारत में कृषि उत्पादन एवं सूती वस्त्र के उत्पादन में वृद्धि हुई। सैन्य सामग्री के उत्पादन में होने वाले परिवर्तनों से युद्ध पद्धति में मौलिक परिवर्तन हुए। तुर्कों के आगमन के साथ घोड़ों में चमड़े की जीन एवं लोहे की नाल का प्रयोग किया जाने लगा। उसी प्रकार कागज उत्पादन में वृद्धि के कारण लिखित रचनाओं की संख्या में वृद्धि हुई।

❖ निष्कर्ष

इस प्रकार तुर्क सत्ता की स्थापना ने उत्तरी भारत में रचनात्मक एवं लाभदायक परिवर्तन लाए, जिससे उत्तरी भारत के इतिहास में एक नवीन युग का आरंभ हुआ।

❐ तराइन के द्वितीय युद्ध के पश्चात्

1192 ई. में तराइन के द्वितीय युद्ध के पश्चात् मुहम्मद गोरी भारतीय क्षेत्र का प्रशासक कुतुबुद्दीन ऐबक को बनाकर स्वयं गजनी लौट गया। 1192–94 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने बरन, मेरठ, रणथम्भौर, दिल्ली, कोइल (अलीगढ़) आदि क्षेत्रों को जीता, किंतु वह कन्नौज के शासक जयचंद को पराजित नहीं कर सका।

❐ चंदावर का युद्ध (1194 ई.)

1194 ई. में मुहम्मद गोरी पुन: भारत आया तथा कुतुबुद्दीन ऐबक की सहायता से चंदावर या चाँदवाड़ा (इटावा, उ. प्र.) के युद्ध में गहड़वाल वंश के शासक जयचंद को पराजित किया। जयचंद युद्धभूमि में ही मारा गया। इस प्रकार कन्नौज पर भी तुर्कों का अधिकार हो गया। कन्नौज विजय के पश्चात् मुहम्मद गोरी ने लक्ष्मी की आकृति युक्त सिक्के जारी किए थे। लक्ष्मी कन्नौज की कुलदेवी थी। इसके पश्चात् मुहम्मद गोरी पुन: वापस गजनी लौट गया।

1194–95 ई. के मध्य कुतुबुद्दीन ऐबक ने भारतीय मंदिरों को नष्ट कर उनकी जगह नवीन मस्जिदें बनवाई। कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली स्थित विष्णु मंदिर के स्थान पर कुव्वत–उल–इस्लाम मस्जिद तथा अजमेर में विग्रहराज चतुर्थ (वीसलदेव) द्वारा निर्मित संस्कृत विद्यालय (सरस्वती कण्ठाभरण विद्यापीठ) के स्थान पर अढ़ाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद बनवाई।

1195–96 ई. में मुहम्मद गोरी पुन: भारत आया। इस बार उसने बयाना को जीता और ग्वालियर पर आक्रमण किया। इसके पश्चात् गोरी पुन: गजनी लौट गया।

1197 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने गुजरात पर आक्रमण कर भीमदेव द्वितीय को पराजित किया और अन्हिलवाड़ा को लूटा। 1203 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने चंदेल शासक परमार्दिदेव को पराजित कर महोबा, कालिंजर तथा खजुराहो पर अधिकार कर लिया।

❐ बख्तियार खिलजी

बिहार और बंगाल की विजय का श्रेय मुहम्मद गोरी के एक अन्य गुलाम इख्तियारुद्दीन बख्तियार खिलजी को प्राप्त है। 1202–03 ई. में बख्यितार खिलजी ने बिहार स्थित ओदंतपुरी, नालन्दा, विक्रमशिला विश्वविद्यालयों को नष्ट कर वहाँ के बौद्ध भिक्षुओं का कत्ल कर दिया। इस प्रकार संपूर्ण बिहार पर उसका अधिकार हो गया।

1204–05 ई. में बख्यितार खिलजी ने मात्र 18 घुड़सवारों की सहायता से बंगाल के शासक लक्ष्मणसेन की राजधानी नदिया पर आक्रमण कर उसे भी जीत लिया। लक्ष्मणसेन एक विद्वान शासक था। उसके दरबार में रहने वाले विद्वान जयदेव ने 'गीतगोविन्द' नामक संस्कृत काव्य की रचना की थी। लक्ष्मणसेन ने पूर्वी बंगाल पर अपना अधिकार बनाए रखा तथा वहाँ से शासन करता रहा, जबकि बख्यितार खिलजी ने शेष बंगाल पर अधिकार स्थापित कर अपनी राजधानी लखनौती में स्थापित की।

1205 ई. में बख्यितार खिलजी तिब्बत की ओर बढ़ गया, किन्तु वह असम के माघ वंशीय शासक से पराजित हुआ। इसी समय 1206 ई. में बख्तियार खिलजी के सरदार अलीमर्दान खाँ ने उसका कत्ल कर दिया।

❐ मुहम्मद गोरी की मृत्यु

1202 ई. में मुहम्मद गोरी के भाई गियासुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त मुहम्मद गोरी गजनी के साथ–साथ गोर प्रदेश का भी शासक बन गया था, परन्तु 1204 ई. में ईरान के ख्वारिज्म शासक से हुए अन्धखुद के युद्ध में पराजित हुआ।

अन्धखुद के युद्ध में मिली पराजय से भारत में मुहम्मद गोरी की मृत्यु की अफवाह फैल गई। इसके कारण भारत के कई क्षेत्रों में विद्रोह हो गए। गोरी इन विद्रोहों को कुचलने के लिए पुन: भारत आया।

1206 ई. में मुहम्मद गोरी ने यद्यपि पंजाब में खोखरों के विद्रोह को कुचल दिया, किन्तु सिन्धु नदी के तट पर दमयक नामक स्थान पर नमाज़ पढ़ते हुए खोखरों या करमातियों के एक गिरोह ने उसकी हत्या कर दी। मुहम्मद गोरी के शव को गजनी में दफना दिया गया।

मुहम्मद गोरी का कोई पुत्र नहीं था, अत: उसकी मृत्यु के उपरान्त उसके साम्राज्य का विभाजन उसके गुलामों के मध्य हुआ। गजनी व गोर पर यल्दोज का, उच्छ व सिंध पर कुबाचा का तथा भारतीय क्षेत्र पर कुतुबुद्दीन ऐबक का अधिकार हो गया।